सत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो[1] संखेज्जभागा वा फोसिदा। अदीदाणागदवट्टमाणकालेसु मणुस-असंजदसम्मादिट्ठीणं मणुससम्मामिच्छादिट्ठिभंगो। णवरि मारणंतियसमुग्घादगदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो। तं कधं? मणुससम्मादिट्ठिदेवेसु मारणंतियं करेंता संखेज्जपंथ-संखेज्जविमाणेसु चेव मारणंतियं करेंति, वाणवेंतर-जोदिसिएसु तेसिमुप्पत्तीए अभावादो। तत्थ एक्केक्किस्से वट्टाए जदि वि असंखेज्जदिजोयणलक्खबाहल्लं होदि, तो वि तिरियलोगस्स असंज्जदिभागमेत्तं चेव खेत्तं फोसिदं होज्ज। तेणेदमप्पधाणं। मणुसा पुव्वं तिरिक्खेसु बद्धायुगा पच्छा सम्मत्तं घेत्तूण तिरिक्खेसु उप्पज्जंति, एदं खेत्तं पधाणं। कधमेदमाणिज्जदे? सयंपहपव्वादो उवरिमखेत्तविक्खंभं ठविय–

> व्यासं षोडशगुणितं षोडशसहितं त्रिरूपरूपहृतं
> व्यासत्रिगुणितसहितं सूक्ष्मादपि तद्भवेत्सूक्ष्मम् ॥ ९ ॥

किया है। विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घात, इन पदोंकी अपेक्षा मनुष्योंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यलोकका संख्यातवां भाग और संख्यात बहुभाग स्पर्श किया है। अतीत, अनागत और वर्तमान, इन तीनों कालोंमें मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंकी स्पर्शनप्ररूपणा मनुष्य सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके समान है। विशेष बात यह है कि मारणान्तिकसमुद्घातगत असंयत मनुष्योंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग और तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है।

शंका– मारणान्तिकसमुद्घातगत असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंने तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग कैसे स्पर्श किया?

समाधान– देवोंमें मारणान्तिकसमुद्घात करने वाले सम्यग्दृष्टि मनुष्य संख्यात मार्ग वाले संख्यात विमानोंमें ही मारणान्तिकसमुद्घात करते हैं, क्योंकि, उनकी वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंमें उत्पत्ति नहीं होती है। उनमें एक एक मारणान्तिकसमुद्घातके मार्गका यद्यपि असंख्यात लाख लोक बाहल्य होता है, तो भी वह क्षेत्र (सब मिलकर) तिर्यग्लोकके असंख्यातवें भागमात्र ही स्पर्श किया गया होगा। इसलिए यह क्षेत्र यहां पर अप्रधान है। पहले तिर्यंचोंमें जिन्होंने आयु बांध ली है ऐसे मनुष्य पीछे सम्यक्त्वको ग्रहण करके तिर्यंचोंमें उत्पन्न होते हैं, यह क्षेत्र यहां पर प्रधान है।

शंका– बद्धायुष्क मनुष्योंका यह उपपादक्षेत्र कैसे निकाला जाता है?

समाधान– स्वयंप्रभ पर्वतसे उपरिम क्षेत्रके विष्कम्भको स्थापित करके–

व्यासको सोलहसे गुणा करें, पुनः सोलह जोड़ें. पुनः तीन, एक और एक अर्थात् एकसौ तेरह (११३) का भाग देवें। पुनः व्यासका तिगुणा जोड़ देवें, तो सूक्ष्मसे भी सूक्ष्म परिधिका प्रमाण आ जाता है ॥ ९ ॥

---

१ आ-क प्रत्यो. '-मागो संखेज्जमागो वा' इति पाठः।

एदीए गाहाए परिधिमाणीय विक्खंभचउब्भागेण गुणिय संखेज्जंगुलेहि गुणिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो मारणंतियखेत्तं होदि । अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणं । उववादगदेहि असंजदसम्मादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो । तं जहा-जदि वि अट्ठरज्जुखेत्तं रज्जुविक्खंभमदीदकाले चउव्विहा देवा आऊरिय ट्ठिदा असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसेसु उप्पज्जंति, तो वि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो फोसणं, देवसासणाणं व तत्थतण असंजदसम्मादिट्ठीणं मणुसेसुप्पज्ज-माणाणमागमणणियमोवलंभादो । एसो अत्थो अण्णत्थ वि वत्तव्वो । अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । संजदासंजदाणं वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगो । सत्थाणसत्थाणेण अदीदकाले संजदासंजदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदि-भागो फोसिदो । विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि चदुण्हं

इस गाथाके अनुसार परिधिको निकालकर और विष्कम्भके चतुर्भागसे गुणाकर पुनः संख्यात अंगुलोंसे गुणा करने पर तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण मारणान्तिकक्षेत्र हो जाता है । वह क्षेत्र अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा होता है ।

उदाहरण– स्वयंप्रभ पर्वतसे उपरिम भाग अर्थात् भीतरी क्षेत्रका विष्कम्भ–

$$१ - \frac{५}{८} = \frac{३}{८}; \quad \frac{\frac{३}{८} \times \frac{१६}{१} + \frac{१६}{१}}{११३} + \frac{९}{८} \times \frac{३}{३२} = \frac{३५७१}{२९०५६} \text{ राजु प्रतर,}$$

यह मारणान्तिकसमुद्धातगत असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंका क्षेत्र है जो राजुप्रतरके अष्टमांशसे कुछ अधिक होनेके कारण तिर्यग्लोक अर्थात् ७ × १ राजुका संख्यातवां भाग तथा पैंतालीस लाख योजन विष्कम्भ वाले अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा बड़ा है ।

उपपादपदगत असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग और तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है । वह इसप्रकार है– यद्यपि अतीतकालमें आठ राजु आयत और एक राजु विस्तृत क्षेत्रको प्राप्त करके स्थित चारों प्रकारके असंयत-सम्यग्दृष्टि देव, मनुष्योंमें उत्पन्न हैं तो भी वह स्पर्शनक्षेत्र तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग ही होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके समान वहांके मनुष्योंमें उत्पन्न होने वाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंके आगमनका नियम पाया जाता है । यह अर्थ अन्यत्र भी कहना चाहिए । उन्हीं जीवोंने अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है ।

संयतासंयत मनुष्योंकी वर्तमानकालिक स्पर्शनकी प्ररूपणा क्षेत्रके समान है । स्वस्थानस्वस्थानपदकी अपेक्षा संयतासंयत मनुष्योंने अतीतकालमें सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है । विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्धातगत मनुष्य संयतासंयतोंने सामान्यलोक

लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो, संखेज्जा भागा वा फोसिदा। मारणंतियसमुग्घादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। कारणं चिंतिय वत्तव्वं। पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं।

सजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जा वा भागा, सव्वलोगो वा ॥ ३९ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं उत्तो त्ति संपदि ण उच्चदे। एवं पज्जत्तमणुस-मणुसिणीसु। णवरि मणुसिणीसु असंजदसम्माइट्ठीणं उववादो णत्थि। पमत्ते तेजाहारं णत्थि।

मणुसअपज्जत्तेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ४० ॥

सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस संखेज्जदिभागो फोसिदो। मारणंतिय-उववादगदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, दोलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो।

आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रका संख्यातवां भाग अथवा संख्यात बहुभागप्रमाण क्षेत्र स्पर्श किया है। मारणान्तिकसमुद्घातगत संयतासंयत मनुष्योंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। इसका कारण विचार कर कहना चाहिए। प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लगाकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती मनुष्योंका स्पर्शनक्षेत्र ओघप्ररूपणाके समान लोकका असंख्यातवां भाग है।

सयोगिकेवली जिनोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग, असंख्यात बहुभाग और सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ ३९ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले कह आये हैं, इसलिए अब नहीं कहते हैं। इसी प्रकारसे पर्याप्तमनुष्य और मनुष्यनियोंका स्पर्शनक्षेत्र जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि मनुष्यनियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका उपपाद नहीं होता है और प्रमत्तसंयतगुणस्थानमें तैजस एवं आहारकसमुद्घात नहीं होते हैं।

लब्ध्यपर्याप्त मनुष्योंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ४० ॥

स्वस्थानस्वस्थान, वेदना और कषायसमुद्घातगत लब्ध्यपर्याप्त मनुष्योंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है। मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदगत उक्त जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्य तथा तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है।

सव्वलोगो वा ॥ ४१ ॥

सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो, संखेज्जा भागा वा अदीदकाले फोसिदा। मारणंतिय-उववादगदेहि सव्वलोगो फोसिदो, सव्वत्थ गमणागमणे विरोहाभावा।

देवगदीए देवेसु मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ ४२ ॥

एत्थ ताव मिच्छादिट्ठीणं उच्चदे– सत्थाणसत्थाणपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एवं विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदाणं पि वत्तव्वं। मारणंतिय-उववादगदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो। सासणसम्मादिट्ठिस्स सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-

---

लब्ध्यपर्याप्त मनुष्योंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ ४१ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, वेदना और कषायसमुद्घातगत लब्ध्यपर्याप्त मनुष्योंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग, मनुष्यक्षेत्रका संख्यातवां भाग अथवा संख्यात बहुभाग अतीतकालमें स्पर्श किया है। मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादगत मनुष्योंने सर्वलोक स्पर्श किया है, क्योंकि, उनके सर्वत्र गमनागमनमें कोई विरोध नहीं।

देवगतिमें देवोंमें मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ४२ ॥

यहांपर पहले मिथ्यादृष्टि देवोंका स्पर्शनक्षेत्र कहते हैं- स्वस्थानस्वस्थानपदसे परिणत मिथ्यादृष्टि देवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। इसी प्रकारसे विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घात, इन पदोंको प्राप्त देवोंका भी स्पर्शनक्षेत्र कहना चाहिए। मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदवाले मिथ्यादृष्टि देवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग और नरलोक तथा तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकपदवाले सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघक्षेत्रकी प्ररूपणाके समान है। मारणान्तिक-

---

१ देवगतौ देवैर्मिथ्यादृष्टिसासादनसम्यग्दृष्टिभिर्लोकस्यासंख्येयभागः अष्टौ नव चतुर्दशभागा वा देशोनाः। स. सि. १, ८.

वेउव्वियपदाणं खेत्तोघं । मारणंतिय-उववादपदाणं पि खेत्तोघमेव होदि । एसा वट्टमाणपमाणपरूवणा । अदीदाणागदपरूवणट्ठमाह–

अट्ठ णव चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ४३ ॥

सत्थाणसत्थाणमिच्छादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एत्थ ओघकारणं वत्तव्वं । सासणसम्मादिट्ठीहि सत्थाणसत्थाणपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एत्थ वि ओघकारणं वत्तव्वं । विहारवदिसत्थाण–वेदण–कसाय–वेउव्वियपरिणदेहि दोगुणट्ठाणजीवेहि अदीदकाले अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । केण ऊणा ? तदियपुढविहेट्ठिमतलसहस्सजोयणेहि अण्णेहि वि देवाणमगम्मपदेसेहि । मारणंतियसमुग्घादगदेहि मिच्छादिट्ठिसासणसम्मादिट्ठीहि णव चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, हेट्ठा दो रज्जू, उवरि सत्त

समुद्घात और उपपादपदवाले जीवोंका भी स्पर्शनक्षेत्र ओघ क्षेत्रप्ररूपणाके समान ही होता है । इसप्रकार यह वर्तमानकालिक स्पर्शनक्षेत्रके प्रमाणकी प्ररूपणा समाप्त हुई । अब अतीत और अनागत कालसम्बन्धी स्पर्शनक्षेत्रके प्ररूपण करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं–

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और कुछ कम नौ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ।। ४३ ।।

स्वस्थानस्वस्थान पदवाले मिथ्यादृष्टि देवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । यहांपर कारण ओघके समान कहना चाहिए । स्वस्थानस्वस्थानपदपरिणत सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । यहांपर भी कारण ओघके समान ही कहना चाहिए । विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घात, इन पदोंसे परिणत मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि, इन दो गुणस्थानवर्ती देवोंने अतीतकालमें कुछ कम आठ बटे चोदह ($\frac{८}{१४}$) भाग स्पर्श किये हैं ।

शंका– यहां आठ बटे चौदह भाग किस क्षेत्रसे कम हैं ?

समाधान– तृतीय पृथिवीके अधस्तन तलसम्बन्धी एक हजार योजनोंसे, तथा अन्य भी देवोंकेअगम्य प्रदेशोंसे कम हैं ।

मारणान्तिकसमुद्घातगत मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंने मंदराचलसे नीचे दो राजु और ऊपर सात राजु, इस प्रकार कुछ कम नौ बटे चौदह ($\frac{९}{१४}$) भाग स्पर्श

रज्जु त्ति । उववादगदेहि मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि पंच चोद्दसभागा देसूणा फोसदा, सहस्सारकप्पादो उवरिमेदेसिमुववादाभावा । छक्कापक्कमणियमे संते पंचचोद्दसभागफोसणं ण जुज्जदि त्ति णासंकणिज्जं, चदुण्हं दिसाणं हेट्ठुवरिमदिसाणं च गच्छंतेहि तदाफोसणं पडि विरोहाभावादो ।

का दिसा णाम ? सगट्ठाणादो कंडुज्जुवा दिसा णाम । ताओ छच्चेव, अण्णेसिमसंभवादो । का विदिसा णाम ? सगट्ठाणादो कण्णायारेण ट्ठिदखेत्तं विदिसा । जेण सव्वे जीवा कण्णायारेण ण जांति तेण छक्कापक्कमणियमो जुज्जदे । ण च एगदंडेणेव उप्पत्तिट्ठाणेण उवरि सरिसा होंति त्ति णियमो, एगंगुलादिवियप्पेहि तिरिक्खेण आयदं पढमदंडं काऊण तिरिक्ख-मणुसाणं विदियदंडेण सगुप्पत्तिट्ठाणपावणे विरोहाभावादो । भवणवासिएसु उप्पज्जमाणतिरिक्खुववादखेत्ते गहिदे पंच रज्जू

किये हैं । उपपादपदगत मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंने कुछ कम पांच बटे चौदह ($\frac{5}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं, क्योंकि, सहस्रारकल्पसे ऊपर इन दोनों गुणस्थानवर्ती जीवोंका उपपाद नहीं होता है ।

शंका– छहों दिशाओंमें जाने आनेका नियम होनेपर सासादनगुणस्थानवर्ती देवोंका स्पर्शनक्षेत्र पांच बटे चौदह भागप्रमाण नहीं बनता है ?

समाधान– ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि, चारों दिशाओंको और ऊपर तथा नीचेकी दिशाओंको गमन करनेवाले सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके पांच बटे चौदह भाग प्रमाण क्षेत्र स्पर्श करनेके प्रति कोई विरोध नहीं है ।

शंका– दिशा किसे कहते हैं ?

समाधान– अपने स्थानसे बाणकी तरह सीधे क्षेत्रको दिशा कहते हैं ।

वे दिशाएं छह ही होती हैं, क्योंकि, अन्य दिशाओंका होना असंभव है ।

शंका– विदिशा किसे कहते हैं ?

समाधान– अपने स्थानसे कर्णरेखाके आकारसे स्थित क्षेत्रको विदिशा कहते हैं ।

चूंकि मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद पदगत सभी जीव कर्णरेखाके आकारसे अर्थात् तिरछे मार्गसे नहीं जाते हैं, इसलिए छह दिशाओंके अपक्रम अर्थात् गमनागमनका नियम बन जाता है । तथा, एक दंडके द्वारा ही सब जीव ऊपर उत्पत्तिस्थानकी अपेक्षा समतलस्थ हो जाते हैं, ऐसा नियम भी नहीं है, क्योंकि, एक अंगुल आदिके विकल्पसे तिरछे रूपसे आयत प्रथम दंडको करके तिर्यंच और मनुष्योंका द्वितीय दंडके द्वारा अपने उत्पत्तिस्थानको पानेमें कोई विरोध नहीं है ।

शंका– भवनवासियोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यंचोंके उपपादक्षेत्रको ग्रहण करने पर साधिक पांच राजु स्पर्शनक्षेत्र क्यों नहीं होता है ?

सादिरेया किण्ण होंति त्ति उत्ते ण होंति, अहियखेत्तादो ऊणखेत्तस्स बहुत्तुवदेसा। तं कधं णव्वदे ? हेट्ठा दंडायारेण ओयरिय विग्गहं काऊण भवनवासिएसुप्पण्णाणं पढम-विदियदंडेहि अदीदकाले रुद्धखेत्तादो सहस्सारुववादसेज्जाए उवरिमभागस्स संखेज्जगुणत्ता। विमाणसिहरमुस्सेहजोयणपमाणं ति ण थोवो उवरिमभागो, सहस्सारुवरिमपज्जवसाणस्स लक्खपमाणजोयणेहिंतो बहुअत्तादो। तं कुदो णव्वदे ? देसूणपंच-चोद्दसभागफोसणण्णहाणुववत्तीदो।

सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ ४४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो खेत्तपरूवणाए उत्तो त्ति इह ण उच्चदे।

अट्ठ चोद्दसभागा वा ॥ ४५ ॥

समाधान– ऐसी शंका करनेपर उत्तर देते हैं कि नहीं होता है, क्योंकि, अधिक क्षेत्रकी अपेक्षा कम क्षेत्र बहुत है ऐसा उपदेश पाया जाता है।

शंका– यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान– नीचे दंडाकार आत्मप्रदेशोंसे उतरकर और विग्रह करके भवनवासियोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके प्रथम और द्वितीय दंडोंके द्वारा, अतीतकालमें रुद्धक्षेत्रसे सहस्रार कल्पकी उपपादशय्याका उपरिम भाग संख्यातगुणा है, इसलिए जाना जाता है कि नीचेके अधिक क्षेत्रकी अपेक्षा ऊपरका हीन क्षेत्र प्रधानतया विवक्षित है। देवोंके विमानोंका माप उत्सेधयोजनके प्रमाणसे है, इसलिए उपपादशय्यासे ऊपरी भाग अर्थात् विमानशिखरसे लेकर उसी कल्पके अन्त तकका क्षेत्र स्तोक अर्थात् अल्प नहीं है, क्योंकि, मेरुतलसे नीचेके एक लाख प्रमाणयोजनोंकी अपेक्षा सहस्रारकल्पके विमानशिखरसे ऊपरीपर्यन्त भागका प्रमाण बहुत है।

शंका– यह कैसे जाना ?

समाधान– अन्यथा सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंका देशोन पांच बटे चौदह ($\frac{5}{14}$) भाग स्पर्शनक्षेत्र बन नहीं सकता है, इस अन्यथानुपपत्तिसे जाना जाता है कि भवनवासी देवोंके क्षेत्रकी अपेक्षा ऊपरके विमानवासी देवोंका क्षेत्र यहां पर प्रधानतासे ग्रहण किया गया है।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ४४ ॥

इस सूत्रका अर्थ क्षेत्रप्ररूपणामें कहा गया है, इसलिए यहां पर नहीं कहा जाता है।

सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंने अतीत और अनागतकालमें कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ ४५ ॥

---

१ सम्यग्मिथ्यादृष्ट्यसंयतसम्यग्दृष्टिभिर्लोकस्यासंख्येयभागः अष्टौ चतुर्दशभागा वा देशोनाः। स. सि. १, ८.

सत्थाणसत्थाणपरिणदेहि सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एसो 'वा' सद्दट्ठो। विहारवदिसत्थाण वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-समुग्घादगदेहि असंजदसम्मादिट्ठीहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। उववादगदेहि छ चोद्दसभागा फोसिदा, अच्चुदकप्पादो उवरि मणुसवदिरित्ताणमुववादाभावा। एवं सम्मामिच्छादिट्ठीणं पि। णवरि मारणंतिय-उववादगदा णत्थि।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवेसु मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठी केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ४६ ॥

वाणवेंतर-जोदिसियमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीणं खेत्तभंगो। भवणवासिय-मिच्छादिट्ठीहि सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि वट्टमाणकाले चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो फोसिदो। अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो। उववादपरिणदाणं पि एवं चेव वत्तव्वं। जदि वि एदं दव्वमसंखेज्ज-

---

स्वस्थानस्वस्थानपदपरिणत सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतसम्यग्दृष्टि देवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। यह 'वा' शब्दका अर्थ है। विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय, वैक्रियिक और मारणान्तिकसमुद्घातगत असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंने कुछ कम आठ बटे चौदह ($\frac{8}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं। उपपादगत असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंने छह बटे चौदह ($\frac{6}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं, क्योंकि, अच्युतकल्पसे ऊपर मनुष्योंको छोड़कर अन्य जीवोंके उत्पन्न होनेका अभाव है। इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंका भी स्पर्शन जानना चाहिए, विशेष बात यह है कि इनके मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद, ये दो पद नहीं होते हैं।

भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंमें मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ४६ ॥

वानव्यन्तर और ज्योतिष्क मिथ्यादृष्टि तथा सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंका स्पर्शन क्षेत्रप्ररूपणाके समान है। स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिक-समुद्घातगत भवनवासी मिथ्यादृष्टि देवोंने वर्तमानकालमें सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है। तथा मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। उपपादपदपरिणत उक्त देवोंका भी इसी प्रकारसे स्पर्शनक्षेत्र कहना चाहिए। यद्यपि यह संख्या असंख्यात जगत्श्रेणीप्रमाण प्राप्त होती है, तथापि अपने तिर्यग्लोकके असंख्यातवें

---

१ प्रतिषु इति पाठः।

सेढीमेत्तं, तो वि तिरियलोगस असंखेज्जदिभागं चेव उववादेण वट्टमाणकाले फुसदि, तिरियलोगमज्झम्मि तदसंखेज्जदिभागे चेव भवणावासाणमवट्ठाणादो, तदवट्ठिदविसं मोत्तूणण्णदिसाए गमणाभावादो, हेट्ठा ओयरिय उप्पज्जमाणाणं सुट्ठु थोवत्तादो। मारणंतियसमुग्घादगदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो। भवणवासियसासणसम्मादिट्ठीणं खेत्तभंगो।

अद्धुट्ठा वा, अट्ठ णव चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ४७ ॥

भवणवासियमिच्छादिट्ठीहि सत्थाणसत्थाणपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियपदेहि अद्धुट्ठा वा अट्ठ चोद्दसभागा वा देसूणा। अद्धुट्ठरज्जू सयमेव विहरंति। कधमद्धुट्ठरज्जू जादा? मंदरतलादो हेट्ठा दोण्णि, उवरि जाव सोधम्मविमाणसिहरधजदंडो त्ति दिवड्ढरज्जू। उवरिमदेवपयोगेण अट्ठ रज्जू। मारणंतिय-

---

भागप्रमाण क्षेत्र का ही उपपादके द्वारा वर्तमानकालमें स्पर्श किया है, क्योंकि, तिर्यग्लोकके मध्य भागमें और उसके भी असंख्यातवें भागमें ही भवनवासी देवोंके आवासोंका अवस्थान है। तथा, जिस दिशामें विमान अवस्थित हैं उस दिशाको छोड़कर अन्य दिशामें गमन करनेका अभाव है, तथा, नीचे उतरकर उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण बहुत कम है। मारणान्तिकसमुद्घातगत उक्त देवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यलोक तथा तिर्यग्लोक, इन दोनों लोकोंसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। भवनवासी सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंका स्पर्शनक्षेत्र क्षेत्रप्ररूपणाके समान है।

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि भवनत्रिक देवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा लोकनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम साढ़े तीन भाग, आठ भाग और नौ भाग स्पर्श किये हैं ॥ ४७ ॥

स्वस्थानस्वस्थानपरिणत भवनवासी मिथ्यादृष्टि देवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घातगतपदवाले उक्त देवोंने चौदह भागोंमेंसे देशोन साढ़े तीन भाग, ($\frac{७}{२८}$) अथवा आठ भाग ($\frac{८}{१४}$) प्रमाण क्षेत्र स्पर्श किया है। भवनवासी देव साढ़े तीन राजु प्रमाण क्षेत्र स्वयं ही विहार करते हैं।

शंका— साढ़े तीन राजु कैसे हुए?

समाधान— मंदराचलके तलभागसे नीचे तीसरी पृथिवी तक दो राजु और ऊपर सौधर्मकल्पके विमानके शिखरपर स्थित ध्वजादंड तक डेढ़ राजु, इस प्रकार मिलाकर साढ़े तीन राजु हुए।

उपरिम अर्थात् ऊपरके आरण-अच्युत कल्पवासी देवोंके प्रयोगसे आठ राजुप्रमाण

समुग्घादगदेहि णव चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । उवरि सत्त, हेट्ठा दोण्णि एवं णव रज्जू । उववादपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो । जोयणलक्खबाहल्लं तिरियपदरमदीदकाले किण्ण फुसिज्जदि ? ण, तिरिच्छेण भवणट्ठिदपदेसं गंतूण हेट्ठा मुक्कमारणंतियाण-मुववादेण हेट्ठुवरिमासेसखेत्तफुसणाभावादो । पुणो कधं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तं जुज्जदे ? सगावट्ठिदपदेसादो हेट्ठा गंतूण तिरिच्छेण पल्लट्टिय सगभवणे-सुप्पण्णाणं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो उववादफोसणं होदि । अण्णहा किण्ण होदि ? भवणवासियओग्गाणुपुव्विपडिबद्धागासपदेसाणमवट्ठाणवसेण मारणंतिय-संभवादो । भवणवासियसासणसम्मादिट्ठिसव्वपदाणं भवणवासियमिच्छादिट्ठिभंगो । वाणवेंतरमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो । तं जहा– एगं जगपदरं

विहार करते हैं । मारणान्तिकसमुद्धातगत उन्हीं भवनवासी मिथ्यादृष्टि देवोंने नौ बटे चौदह ($\frac{9}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं । मंदराचलसे ऊपर लोकके अन्त तक सात राजु और नीचे तीसरी पृथिवी तक दो राजु, इस प्रकार नौ राजु होते हैं । उपपादपरिणत उक्त देवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है ।

शंका– भवनवासी मिथ्यादृष्टि देवोंने अतीतकालमें एक लाख योजन बाहल्यवाला तिर्यक्प्रतरप्रमाण क्षेत्र क्यों नहीं स्पर्श किया है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, तिर्यग्रूपसे भवनस्थित प्रदेशको जाकर नीचे मारणान्तिक-समुद्धातको करनेवाले जीवोंके उपपादपदकी अपेक्षा नीचे और ऊपरके समस्त क्षेत्रको स्पर्शन करनेका अभाव है ।

शंका– तो फिर भवनवासी देवोंके उपपादपदकी अपेक्षा तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग स्पर्शनक्षेत्र कैसे बन सकता है ?

समाधान– अपने रहनेके स्थानसे नीचे जाकर पुनः तिरछे रूपसे पलट करके अपने भवनोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंका तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण उपपादपदसम्बन्धी स्पर्शनक्षेत्र हो जाता है ।

शंका– यह स्पर्शनक्षेत्र अन्य प्रकारसे क्यों नहीं होता है ?

समाधान– क्योंकि, भवनवासी देवोंके योग्य आनुपूर्वीनामकर्मसे प्रतिबद्ध आकाश-प्रदेशोंके अवस्थानके वशसे मारणान्तिकसमुद्धात होता है, इसलिए उक्त स्पर्शनक्षेत्र अन्य प्रकारसे नहीं बन सकता है ।

भवनवासी सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके स्वस्थानादि सभी पदोंका स्पर्शनक्षेत्र भवनवासी मिथ्यादृष्टि देवोंके समान है । मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि वानव्यन्तर देवोंने स्वस्थानस्वस्थानकी अपेक्षा सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका

ठविय तप्पाओग्गसंखेज्जपदरंगुलेहि भागे हिदे वेंतरावासाण पमाणं होदि। तमेगावासोगाहणाए संखेज्जघणंगुलपमाणाए गुणिदे संखेज्जंगुलाणि बाहल्लं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं जगपदरं होदि। असंखेज्जजोयणवित्थडा वेंतरावासा अप्पधाणा त्ति कट्टु इदं भणिदं। अह जइ ते चेय पहाणा, जगपदरस्स असंखेज्जाणि पदरंगुलाणि भागहारं ठविय असंखेज्जघणंगुलेहि एगावासुप्पण्णेहि गुणिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदपरिणदमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि सगपच्चएण अद्धुट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। परपच्चएण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। मारणंतियसमुग्घादगदेहि णव चोद्दसभागा फोसिदा। उववादेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। उववादेण तिरियलोगादो असंखेज्जगुणं खेत्तं वट्टमाणकाले अवरुंभिय ट्ठिदवेंतरा अदीदकाले कधं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागं फुसंति त्ति उत्ते ण एस दोसो, खेत्तं णाम सव्वजीवाणमोगाहणाओ उववादविसिट्ठाओ एगट्ठं करिय गहिदे होदि। तेण तिरियलोगादो वेंतरमिच्छादिट्ठि-

---

संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। वह इस प्रकार है– एक जगत्प्रतरको स्थापित करके तत्प्रायोग्य संख्यात प्रतरांगुलोंसे भाग देनेपर संख्यात घनांगुलप्रमाण व्यन्तर देवोंके आवासोंका प्रमाण हो जाता है। उसे संख्यात अंगुलप्रमाण एक आवासकी अवगाहनासे गुणा करनेपर संख्यात घनांगुल बाहल्यवाला और तिर्यग्लोकके संख्यातवें भाग प्रमाण जगत्प्रतर होता है। यद्यपि असंख्यात योजन विस्तारवाले भी व्यन्तरोंके आवास होते हैं, किन्तु वे यहांपर प्रधानरूपसे विवक्षित नहीं हैं, इस अपेक्षासे यह उक्त स्पर्शनक्षेत्र कहा है। और यदि उन्हींको अर्थात् असंख्यात योजन विस्तारवाले विमानोंको ही प्रधान माना जाय, तो जगत्प्रतरका असंख्यात प्रतरांगुलप्रमाण भागहार स्थापित करके एक आवासके क्षेत्रफलकी अपेक्षा उत्पन्न होनेवाले असंख्यात घनांगुलोंसे गुणा करने पर तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग हो जाता है।

विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकपदपरिणत मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि भवनवासी देवोंने स्वप्रत्ययसे अर्थात् अपने आप कुछ कम साढ़े तीन बटे चौदह ($\frac{3\frac{1}{2}}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं। किन्तु परप्रत्ययसे अर्थात् अन्य देवोंके प्रयोगसे कुछ कम आठ बटे चौदह ($\frac{8}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं। मारणान्तिकसमुद्घातगत उक्त दोनों गुणस्थानवर्ती व्यन्तर देवोंने नौ बटे चौदह ($\frac{9}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं। उपपादकी अपेक्षा उक्त जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है।

शंका– उपपादकी अपेक्षा तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र वर्तमानकालमें व्याप्त करके स्थित व्यन्तर देव अतीतकालमें कैसे तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागको स्पर्श करते हैं?

उववादखेत्तमसंखेज्जगुणं जादं। फोसणम्हि पुण जीवप्पडिट्ठिदओगाहणाओ ण घेप्पंति, किंतु तीदकाले उववादपरिणदमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिवेंतरेहि छिछत्त-खेत्तमेव घेप्पदि, वेंतरेसु वि ण देवा णेरइया वा उप्पज्जंति, ण च एइंदिया विगलिंदिया, किंतु सण्णि-असण्णिपंचिंदियतिरिक्ख-मणुसा चेव। ण च वेंतराणमावासा सोधम्मादिसु तिरियलोगबाहिरेसु कप्पेसु अत्थि, तधोवदेसाभावा। ण च लक्ख-जोयणबाहल्लतिरियपदरम्हि सव्वत्थ वेंतरावासा चेव, जोदिसियवासाणं वेलंधर-पण्णगादिआवासाणं च अभावप्पसंगा। ण च भूमीए चेव वेंतरावासा होंति त्ति णियमो अत्थि, आगासपदिट्ठियाणं पि वेंतरावासाणं संभवादो। ण च तिरियलोगे चेव वेंतरावासाणमत्थित्तणियमो, हेट्ठा पंकबहुलपुढवीए वि भूत-रक्खसावासाणमुवलंभादो। तम्हा किंचूणमजोएदूण वेलक्खबाहल्लतिरियपदरं ठविय सत्तकदीए ओवट्टिय पदरा-गारेण ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागबाहल्लं जगपदरं होदि[1]। एवं चेव जोदिसियाणं पि वत्तव्वं, णवरि उववादखेत्ते आणिज्जमाणे णवजोयणसदबाहल्लं

समाधान— यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, सर्व जीवोंकी उपपादविशिष्ट अवगाहनाओंको एकट्ठा करके ग्रहण करने पर 'क्षेत्र' यह नाम होता है, इसलिए मिथ्यादृष्टि व्यन्तरदेवोंका उपपादक्षेत्र तिर्यग्लोकसे असंख्यात गुणा हो जाता है। पर स्पर्शनमें जीवोंसे प्रतिष्ठित अवगाहनाएं नहीं ग्रहण की जाती हैं, किन्तु अतीतकालमें उपपादपरिणत मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि व्यन्तर देवोंसे स्पर्शित क्षेत्र ही ग्रहण किया जाता है। व्यन्तरोंमें भी न तो देव अथवा नारकी जीव उत्पन्न होते हैं और न एकेन्द्रिय व विकलेन्द्रिय जीव ही, वहां केवल संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रियतिर्यंच और मनुष्य ही उत्पन्न होते हैं। तथा तिर्यग्लोकसे बाहिर स्थित सौधर्मादि कल्पोंमें भी व्यन्तर देवोंके आवास नहीं होते हैं, क्योंकि, उस प्रकारसे उपदेशका अभाव है। और न लाख योजन बाहल्यवाले तिर्यक्प्रतरमें ही सर्वत्र व्यन्तर देवोंके आवास होते हैं, अन्यथा चन्द्र सूर्यादि ज्योतिष्क देवोंके आवासोंका और वेलंधर, पन्नग आदि भवनवासी देवोंके आवासोंके अभावका प्रसंग प्राप्त हो जायगा। तथा भूमिमें ही व्यन्तर देवोंके आवास होते हैं, ऐसा भी नियम नहीं है, क्योंकि, आकाशमें प्रतिष्ठित व्यन्तरोंके आवास सम्भव हैं। और न तिर्यग्लोकमें ही व्यन्तर देवोंके आवासोंके अस्तित्वका नियम है, क्योंकि, नीचे रत्नप्रभा पृथिवीके पंकबहुल भागमें भी भूत और राक्षस नामके व्यन्तर देवोंके आवास पाये जाते हैं। इसलिए कुछ कम क्षेत्रको नहीं जोड़कर दो लाख योजन बाहल्यवाले तिर्यक्प्रतरको स्थापित करके सातकी कृति अर्थात् वर्गसे अपवर्तित कर प्रतराकारसे स्थापित करने पर तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण बाहल्यवाला जगत्प्रतर हो जाता है।

इसी प्रकारसे ही ज्योतिष्क देवोंका भी स्पर्शनक्षेत्र कहना चाहिए। विशेष बात यह

---

१ रज्जुकदी गुणिदव्वा णवणउदिसहस्सा अधियलक्खेण। तम्मज्झे तिवियप्पा वेंतरदेवाण होंति पुरा॥ भवणं भवणपुराणि आवासा इय भवंति तिवियप्पा। जिणमुहकमलविणिग्गदवेंतरपण्णत्तिणामाए॥ रयणप्पह-पुढवीए भवणाणि दीव-उवहिउवरिम्मि। भवणपुराणि दहगिरिपहुदीणं उवरि आवासा॥ ति. प. पत्र १९६.

तिरियपदरं सत्तकदीए खंडिय पदरागारेण ट्ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागबाहल्लं जगपदरं होदि[1]।

सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ४८ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो– सत्थाणसत्थाण–विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियमारणंतियपदपरिणदेहि सम्मामिच्छादिट्ठि-संजदसम्मादिट्ठीहि भवणवासिय-वेंतर-जोदिसिएहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो।

अध्दुट्ठा वा अट्ठ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ४९ ॥

सत्थाणसत्थाणभवणवासिय–वाणवेंतर-जोदिसिय-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। णवरि भवणवासिएसु चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो फोसिदो त्ति वत्तव्वं। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-

---

है कि उनके उपपादक्षेत्रको लाते समय नौ योजन बाहल्यवाले तिर्यक्प्रतरको सातके वर्गद्वारा खंडितकर प्रतराकारसे स्थापित करनेपर तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण बाहल्यवाला जगत्प्रतर होता है।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि भवनत्रिक देवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ४८ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं– स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय, वैक्रियिक और मारणान्तिकसमुद्घात, इन पदोंसे परिणत सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि भवनत्रिक देवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम साढे तीन बटे चौदह भाग और कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ ४९ ॥

स्वस्थानस्वस्थानपदवाले भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। विशेष बात यह है कि भवनवासियोंमें सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है, ऐसा कहना चाहिए। विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय, वैक्रियिक और मारणान्तिक-

---

१ रज्जुकदी गुणिदव्वं एक्कसयदसुत्तरेहिं जोयणए। तस्सि अगम्मदेसं सोधिय सेसम्मि जोदिसिया ॥ ति. प. ७, ५.

मारणंतियपदपरिणदेहि सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मामिच्छादिट्ठीहि अद्धुट्ठा चोद्दसभागा देसूणा सगपच्चएण; परपच्चएण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। णवरि सम्मामिच्छादिट्ठीणं मारणंतियपदं णत्थि।

सोधम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति देवोघं ॥ ५० ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि मिच्छादिट्ठीहि वट्टमाणकाले चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो। सेसगुणट्ठाणजीवेहि अप्पप्पणो पदेसु वट्टमाणेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। तीदे काले सोधम्मीसाणकप्पवासियमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि सत्थाणसत्थाणपदपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। तं जहा– सव्वे इंदया संखेज्जजोयणवित्थडा, सेढीबद्धा असंखेज्जजोयणवित्थडा,

---

समुद्घात, इन पदोंसे परिणत सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि भवनत्रिक देवोंने स्वप्रत्ययसे कुछ कम साढ़े तीन बटे चौदह ($\frac{३\frac{१}{२}}{१४}$) भाग स्पर्श किये हैं; तथा परप्रत्ययसे कुछ कम आठ बटे चौदह ($\frac{८}{१४}$) भाग स्पर्श किये हैं। विशेष बात यह है कि सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके मारणान्तिकपद नहीं होता है।

सौधर्म और ईशान कल्पवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती देवोंका स्पर्शनक्षेत्र देवोंके ओघस्पर्शनके समान है ॥ ५० ॥

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकपदपरिणत मिथ्यादृष्टि देवोंने वर्तमानकालमें सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदसे परिणत सौधर्म-ऐशान देवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तथा नरलोक और तिर्यग्लोक, इन दोनों लोकोंसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। स्वस्थानस्वस्थान आदि अपने अपने पदोंमें वर्तमान सासादनादि शेष गुणस्थानवर्ती देवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। अतीतकालमें सौधर्म और ईशान कल्पवासी स्वस्थानस्वस्थानपदपरिणत मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। वह इस प्रकार है– सभी इन्द्रकविमान संख्यात योजन विस्तारवाले होते हैं, श्रेणीबद्धविमान असंख्यात योजन विस्तृत और

पइण्णया वा मिस्सा[1]। एत्थ जदि वि सव्वविमाणाणि संखेज्जजोयणवित्थडाणि त्ति घेप्पंति, तो वि सव्वविमाणखेत्तफलसमासो तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागो चेव होदि। तं जहा– एगविमाणायामो असंखेज्जजोयणमेत्तो त्ति कट्टु असंखेज्जजोयणविक्खंभेणायामं गुणिय विमाणुस्सेहसंखेज्जंगुलेहि गुणिदे तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागो होदि, एक्केक्कविमाणायाम-विक्खंभाणं सेढिपढमवग्गमूलादो असंखेज्जगुणपमाणत्तादो[2]। तं सोधम्मीसाणविमाणसंखाए गुणिदे वि तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागो होदि त्ति। एत्थ सव्वकप्पाणं कमेण विमाणसंखापरूवयगाहाओ–

वत्तीसं सोहम्मे अट्ठावीसं तहेव ईसाणे।
वारह सणक्कुमारे अट्ठेव य होंति माहिंदे ॥ १० ॥
बम्हे कप्पे बम्होत्तरे य चत्तारि सयसहस्साइं।
छसु कप्पेसु य एवं चउरासीदी सयसहस्सा ॥ ११ ॥
पण्णासं तु सहस्सा लंतव-काविट्ठएसु कप्पेसु।
सुक्क-महासुक्केसु य चत्तालीसं सहस्साइं ॥ १२ ॥

प्रकीर्णकविमान मिश्र अर्थात् संख्यात और असंख्यात योजन विस्तारवाले होते हैं। यहांपर यदि सभी विमान असंख्यात योजन विस्तारवाले हैं, ऐसा समझकर ग्रहण करते हैं तो भी सभी विमानोंके क्षेत्रफलका जोड़ तिर्यग्लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होता। (वह इस प्रकारसे है– एक विमानका आयाम असंख्यात योजनप्रमाण होता है।) इसलिए असंख्यात योजन विष्कम्भसे आयामको गुणा करके विमानके उत्सेधसम्बन्धी संख्यात अंगुलोंसे गुणा करनेपर तिर्यग्लोकका असंख्यातवां भाग ही होता है, क्योंकि, एक एक विमानका आयाम और विष्कम्भ जगत्श्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे असंख्यातगुणित (हीन) प्रमाण होता है। उसे सौधर्म ईशानकल्पकी विमानसंख्यासे गुणा करनेपर भी तिर्यग्लोकका असंख्यातवां भाग ही रहता है। यहांपर सभी कल्पोंके विमानोंकी क्रमसे संख्याओंकी प्ररूपणा करनेवाली गाथाएं इस प्रकार हैं–

सौधर्मकल्पमें बत्तीस लाख विमान हैं, उसी प्रकारसे ईशानकल्पमें अट्ठाईस लाख, सनत्कुमारकल्पमें बारह लाख तथा माहेन्द्रकल्पमें आठ लाख विमान होते हैं ॥ १० ॥

ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर कल्पमें दोनों कल्पोंके मिलाकर चार लाख विमान हैं। इस प्रकार इन पूर्वमें बताए गये छह कल्पोंमें विमानोंकी संख्या चौरासी लाख होती है ॥ ११ ॥

जैसे– ३२००००० + २८००००० + १२००००० + ८०००००+ ४००००० = ८४००००० सौधर्मादि छह स्वर्गोंकी विमानसंख्या.

लान्तव और कापिष्ठ इन दोनों कल्पोंमें पचास हजार विमान होते हैं। शुक्र और महाशुक्र कल्पमें चालीस हजार विमान हैं ॥ १२ ॥

---

१ इंदियसेढीबद्धप्पइण्णयाणं कमेण वित्थारा। संखेज्जमसंखेज्जं उभयं च य जोयणाण हवे। त्रि. सा. १६८

२ 'असंखेज्जगुणहीणपमाणत्तादो' इति पाठः प्रतिभाति।

छच्चेव सहस्साइं सयारकप्पे तहा सहस्सारे ।
सत्तेव विमाणसया आरणकप्पच्चुदे चेय ॥ १३ ॥
एक्कारसयं तिसु हेट्ठिमेसु तिसु मज्झिमेसु सत्तहियं ।
एक्काणउदिविमाणा तिसु गेवज्जेसुवरिमेसु ॥ १४ ॥
गेवज्जाणुवरिमया णव चेव अणुद्दिसा विमाणा ते ।
तह य अणुत्तरणामा पंचेव हवंति संखाए ॥ १५ ॥

विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । मारणंतियपरिणदेहि मिच्छादिट्ठि-सासणेहि णव चोद्दसभागा फोसिदा । उववादपरिणदेहि दिवड्ढचोद्दसभागा फोसिदा । सोधम्मकप्पो धरणीतलादो दिवड्ढरज्जुमोस्सरिय ट्ठिदो त्ति सम्मामिच्छादिट्ठीहि सत्थाणसत्थाणपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । विहारवदिसत्थाण-वेदणकसाय-वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । एवं असंजदसम्मादिट्ठीणं पि । णवरि मारणंतिएण अट्ठ चोद्दसभागा, उववादेण दिवड्ढ चोद्दसभागा

शतार और सहस्रार कल्पमें छह हजार विमान होते हैं । आनत, प्राणत, आरण और अच्युत, इन चार कल्पोंमें मिलाकर सातसौ विमान होते हैं ॥ १३ ॥

अधस्तन तीन ग्रैवेयकोंमें एक सौ ग्यारह विमान, मध्यम तीन ग्रैवेयकोंमें एक सौ सात विमान और उपरिम तीन ग्रैवेयकोंमें इक्यानवें विमान होते हैं ॥ १४ ॥

नव ग्रैवेयकोंके ऊपर अनुदिश संज्ञावाले नौ विमान होते हैं । उनके ऊपर अनुत्तर संज्ञावाले पांच विमान होते हैं ॥ १५ ॥

विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घात, इन पदोंको प्राप्त सौधर्म-ईशान कल्पके मिथ्यादृष्टि और सासादनगुणस्थानवर्ती देवोंने कुछ कम आठ बटे चौदह (८/१४) भाग स्पर्श किये हैं । मारणान्तिकपदसे परिणत उक्त मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंने नौ बटे चौदह (९/१४) भाग स्पर्श किये हैं । उपपादपदपरिणत उन्हीं जीवोंने डेढ़ बटे चौदह (३/२८) भाग स्पर्श किये हैं, क्योंकि, सौधर्मकल्प धरणीतलसे डेढ़ राजु ऊपर जाकर स्थित है । स्वस्थानस्वस्थानपदपरिणत सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग, और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घात, इन पदोंसे परिणत उक्त देवोंने कुछ कम आठ बटे चौदह (८/१४) भाग स्पर्श किये हैं ।

इसी प्रकारसे असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंका भी स्पर्शनक्षेत्र जानना चाहिए । विशेष बात यह है कि असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंने मारणान्तिकसमुद्घातकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह (८/१४) भाग और उपपादकी अपेक्षा कुछ कम डेढ़ बटे चौदह (३/२८) भाग स्पर्श किये हैं ।

देसूणा फोसिदा। जेणेवं देवोघादो सोधम्मकप्पे ण विसेसो अत्थि तेण देवोघमिदि सुत्तवयणं सुट्ठु सुघडमिदि।

सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदार-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५१ ॥

एदेसिं पंचण्हं कप्पाणं चदुगुणट्ठाणजीवेहि जहासंभवं सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एसा वट्टमाणपरूवणा।

अट्ठ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ५२ ॥

पंचकप्पवासियचदुगुणट्ठाणजीवेहि सत्थाणसत्थाणपदपरिणदेहि अदीदकाले चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। विहारवदि-सत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-पदपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। उववादपरिणदेहि सणक्कुमार-माहिंददेवेहिं तिण्णि चोद्दसभागा देसूणा

चूंकि देवोंके ओघस्पर्शनसे सौधर्मकल्पमें कोई विशेषता नहीं है, इसलिए 'देवोघ' यह सूत्र वचन भले प्रकार सुघटित होता है।

सनत्कुमारकल्पसे लेकर शतार सहस्रारकल्प तकके देवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती देवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ५१ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय, वैक्रियिक, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद, इन पदोंसे यथासंभव परिणत उक्त पांचों कल्पोंके चारों गुणस्थानोंमें रहनेवाले देवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। यह वर्तमानकालिक स्पर्शनके क्षेत्रकी प्ररूपणा है।

सनत्कुमारकल्पसे लेकर सहस्रारकल्प तकके मिथ्यादृष्टि आदि चारों गुणस्थानवर्ती देवोंने अतीत और अनागत कालमें कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ ५२ ॥

सनत्कुमारादि पांच कल्पोंके चारों गुणस्थानवर्ती स्वस्थानस्वस्थान पदपरिणत देवोंने अतीतकालमें सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय, वैक्रियिक और मारणान्तिकसमुद्घात, इन पदोंसे परिणत उक्त देवोंने कुछ कम आठ बटे चौदह ($\frac{८}{१४}$) भाग स्पर्श किये हैं। उपपादपरिणत सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्पवासी देवोंने कुछ कम तीन बटे चौदह ($\frac{३}{१४}$) भाग स्पर्श किये हैं। ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर कल्पवासी देवोंने कुछ कम साढ़े

फोसिदा। बम्ह-बम्हुत्तर-कप्पवासियदेवेहि अद्धुट्ठ-चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। लंतव-काविट्ठदेवेहि चत्तारि चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। सुक्क महासुक्कदेवेहि अद्धपंचम-चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। सदर-सहस्सारकप्पवासियदेवेहि पंच चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। णवरि सम्मामिच्छाइट्ठीणं मारणंतिय-उववादा णत्थि।

आणद जाव आरणच्चुदकप्पवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५३ ॥

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणखेत्तपरूवयस्स अत्थो पुव्वं परूविदो त्ति पुणो ण उच्चदे।

छ चोद्दसभागा वा देसूणा फोसिदा ॥ ५४ ॥

मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि सत्थाण-सत्थाणपदपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एसो 'वा' सद्दट्ठो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-

---

तीन बटे चौदह ($\frac{3\frac{1}{2}}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं। लान्तव और कापिष्ठ कल्पवासी देवोंने कुछ कम चार बटे चौदह ($\frac{4}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं। शुक्र और महाशुक्र कल्पवासी देवोंने कुछ कम साढ़े चार बटे चौदह ($\frac{4\frac{1}{2}}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं। शतार और सहस्रार कल्पवासी देवोंने कुछ कम पांच बटे चौदह ($\frac{5}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं। विशेष बात यह है कि सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद, ये दो पद नहीं होते हैं।

आनतकल्पसे लेकर आरण-अच्युत तक कल्पवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती देवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ५३ ॥

वर्तमानकालिक स्पर्शनक्षेत्रके प्ररूपक इस सूत्रका अर्थ पहले कहा जा चुका है, इसलिए पुनः नहीं कहा जाता है।

चारों गुणस्थानवर्ती आनतादि चार कल्पवासी देवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ ५४ ॥

स्वस्थानस्वस्थानपदपरिणत मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। यह 'वा' शब्दका अर्थ हुआ। विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय, वैक्रियिक और मारणान्तिकसमुद्घात, इन पदोंसे परिणत उक्त जीवोंने कुछ कम

परिणदेहि छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, चित्ताए उवरिमतलादो हेट्ठा एदेसिं गमणाभावादो। मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीणं उववादो चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो। कुदो? पणदालीसजोयणलक्खविक्खंभ संखेज्जरज्जुआयदमुववादखेत्तं तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागं ण पावेदि त्ति। सम्मामिच्छाइट्ठीणं मारणंतिय-उववादपदं णत्थि। असंजदसम्माइट्ठीहि उववादपदपरिणदेहि अद्धछक्क-चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। आरणच्चुदकप्पे छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। किं कारणं? तिरिक्खअसंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदाणं वेरियदेवसंबंधेण सव्वदीव-सायरेसु ट्ठिदाणं तत्थुववादोवलंभादो।

णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५५ ॥

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगो। अदीदपरूवणा वि खेत्तभंगो चेय। कुदो? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागत्तेण, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणत्तेण च समाणत्तुवलंभादो।

छह बटे चौदह ($\frac{6}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं, क्योंकि, चित्रा पृथिवीके उपरिम तलसे नीचे इनके गमनका अभाव है, उक्त मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंका उपपादकी अपेक्षा स्पर्शनक्षेत्र सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रसे असंख्यातगुणा है, क्योंकि, पैंतालीस लाख योजन विष्कम्भवाला और संख्यात राजुप्रमाण आयत उक्त देवोंका उपपादक्षेत्र भी तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागको नहीं प्राप्त होता है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपद नहीं होते हैं। आनत-प्राणत कल्पके उपपादपरिणत असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंने कुछ कम साढ़े पांच बटे चौदह ($\frac{11}{28}$) भाग स्पर्श किये हैं। आरण और अच्युतकल्पमें उक्त पदपरिणत जीवोंने कुछ कम छह बटे चौदह ($\frac{6}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं। इसका कारण यह है कि वैरी देवोंके सम्बन्धसे सर्व द्वीप और सागरोंमें विद्यमान तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंका आरण-अच्युतकल्पमें उपपाद पाया जाता है।

नवग्रैवेयक विमानवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक विमानके गुणस्थानवर्ती देवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ५५ ॥

इस सूत्रकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान जानना चाहिए। तथा अतीतकालिक स्पर्शनप्ररूपणा भी क्षेत्रप्ररूपणाके समान ही है, क्योंकि, सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागसे तथा मनुष्यक्षेत्रसे असंख्यातगुणित क्षेत्रकी अपेक्षा समानता पाई जाती है।

अणुद्दिस जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५६ ॥

एदेसु ट्ठिदअसंजदसम्मादिट्ठीहि सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो, णवगेवज्जादिउवरिमदेवाणं तिरिक्खेसु चयणोववादाभावादो। णवरि। पंचपदपरिणदेहि सव्वट्ठसिद्धिदेवेहि माणुसलोगस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो।

एवं गदिमग्गणा समत्ता।

इंदियाणुवादेण एइंदिय-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, सव्वलोगो[1] ॥ ५७ ॥

एइंदिएहि सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तीद-वट्टमाणकालेसु सव्वलोगो फोसिदो। वेउव्वियपरिणदेहि वट्टमाणकाले चदुण्हं

नव अनुदिश विमानोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तक विमानवासी देवोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ५६ ॥

इन नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानोंमें रहनेवाले स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय, वैक्रियिक, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपरिणत असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है, क्योंकि, नवग्रैवेयकादि उपरिम कल्पवासी देवोंका च्यवन होकर तिर्यंचोंमें उपपाद होनेका अभाव है। विशेष बात यह है कि स्वस्थानादि पांच पदोंसे परिणत सर्वार्थसिद्धिके देवोंने मनुष्यलोकका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है।

इस प्रकार गतिमार्गणा समाप्त हुई।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, एकेन्द्रियपर्याप्त, एकेन्द्रियअपर्याप्त; बादर एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रियपर्याप्त, बादर एकेन्द्रियअपर्याप्त; सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रियपर्याप्त और सूक्ष्म एकेन्द्रियअपर्याप्त जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ ५७ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कषाय, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद, इन पदोंसे परिणत एकेन्द्रिय जीवोंने अतीत और वर्तमानकालमें सर्वलोक स्पर्श किया है। वैक्रियिकपदपरिणत एकेन्द्रिय जीवोंने वर्तमानकालमें सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां

---

१ इन्द्रियानुवादेन एकेन्द्रियैः सर्वलोकः स्पृष्टः। स. सि. १, ८.